❀ स्तुति ❀

अक्षय सुख भोगी महावीर जिनचंद,
भाख्यो अक्षयनिधि तपमहा तेज दिणंद ।
सिद्धारथ नरपति त्रिशला देवी नंद,
संप्रति शासन पति प्रणमुं धर आणन्द ॥१॥

जम्बूवर द्वीपे धातकी खड विशाल,
पुष्कर धर अर्द्धे पांच भरत सुरमाल ।
ऐरावत पच महाविदेह गुणमाल,
एकसात सित्तर जिन, वन्दु नित त्रिकाल ॥२॥

अक्षय निधि भाख्यो, सूत्रे श्री भगवंत,
विधियुत आराधे पावे निधि अनन्त ।
भवदुःख विनाशक तारक श्री श्रुतज्ञान,
आराधो भविजन पावो शिव सोपान ॥३॥

समकित धर धारिणी देवी सिद्धायिका सार,
अक्षयनिधि तप आराधक की रखवार ।
जिन शासन मे स्थित सघ चार अपहार,
सबकी हरे चिन्ता भरे सुवर्ण भंडार ॥४॥

॥ अर्हं नमः ॥

श्री सुखसागर भगवद्गुरुभ्यो नमो नमः

श्री अक्षय निधि

—मूल—

देवग्ग ठविअ कलसो, जो पुरओ अक्खयाण मुट्ठिए ।
जो तम्म सत्त सरिसो, तवो समवसरणनिहि त्ति ॥४६७॥

(प्रवचन सारोद्धार)

अर्थ—श्रीजिनेश्वर देव के सामने कुंभ स्थापन कर उसे अक्षत-चावलों को मुट्ठी से प्रत्येक दिन भरना चाहिए। जितने दिनों में वह भरा जाय उतने दिनों तक शक्ति अनुसार जो तप किया जाता है, उस तप को गुरु लोग "अक्षय निधि"—तप फरमाते हैं।

—गुरु-परंपराविधि—

अक्षय निधि—तप नामानुरूप गुणों को धारण करता है। इस तप को करने वाले भव्यात्मा द्रव्य-भाव दोनों प्रकार से इस लोक में और परलोक में अखूट खजाने के स्वामी हो जाते हैं।

इस तप का प्रारम्भ वर्षोपरान्त पर्युषण की संवत्सरी से पूर्व पन्द्रहवें दिन में करना चाहिये। पवित्र वायुमण्डल वाले विशाल स्थान में पहिले चौकी देकर समवसरण का त्रिगड़ा स्थापन कर,

सिंहासन पर श्रीजिनेश्वर भगवान की प्रतिमा विराजमान करनी चाहिये। भगवान के सामने साथिया-गहूँलीकर, उस पर उत्तम धातु का या मिट्टी का कुम्भ स्थापन करना चाहिये। सुगन्धी फूलों से और फूलों की मालाओं से कुम्भ की पूजा करनी चाहिये। उसमें सोना चादी मणि मोती आदि के साथ लौंग सुपारी इलायची आदि डालकर अक्षतों चावलों की एक २ पसली धोबा सोलह दिन तक तीन प्रदक्षिणा देते हुए कुम्भ भर जाय, इस तरह से डालनी चाहिये। उस अक्षयनिधि कुम्भ के सामने अखण्ड दीप रखना चाहिये। धूप खेना चाहिये। नैवेद्य धरना चाहिये। हमेशा केसर चन्दन से पूजा करनी चाहिये। अक्षतों की पसली डाले बाद कुम्भ के मुख पर श्रीफल धर कर कङ्कन डोरडा वाली मौली से पीला या हरा लाल रेशमी वस्त्र बाधना चाहिये। ऊपर चदवा बाधना चाहिये। बाजोठ पर भी कल्पसूत्र की पूजा कर, स्थापन करना चाहिये। वास क्षेप से फूलों से ज्ञान पूजा करनी चाहिये।

इस प्रकार सोलह दिन तक श्री अक्षयनिधि कुम्भ और भगवान के सामने हमेशा दोनों समय प्रतिक्रमण करना चाहिये। देव वन्दन करना चाहिये। अपने हाथ से उस स्थान की प्रमार्जना करनी चाहिये। साय—प्रात मङ्गल गीत गाये जाने चाहिये। ससारी कामों से दूर रहना चाहिये।

ॐ ह्रीँ ऐँ नमो नाणस्स

इस महा मन्त्र का जाप मौन पूर्वक हर समय करते रहना चाहिये। कम से कम बँधी हुई २० नवकार वाली जपनी चाहिये। साथिये एकावन करने चाहिये। ज्ञान तप के एकावन खमासमण देना चाहिये। पूजा प्रभावना यथा शक्ति करनी चाहिये। ब्रह्मचर्य पूर्णतया रखना चाहिये। १५ दिन तक एकासना करना चाहिये।

संवत्सरी का अट्ठम सोलहवां उपवास करना चाहिये। अन्तिम दिन रात्रि जागरण करना चाहिये।

पूर्णाहुति—पारणे के दिन अक्षयनिधि-कुम्भ को ताजे सुगन्धी फूलों की माला से सजाकर सौभाग्यवती स्त्रियों के माथे धरना चाहिये। सब जाति के नैवेद्य लड्डू-पेड़े-बरफी घेवर आदि से पांच थाल भरने चाहिये। सेब-संतरे-केला-अंगूर आदि फलों से पांच थाल भरने चाहिये इनको भी सजाकर सौभाग्यवती स्त्रियों के माथे उठाना चाहिये। बड़ी धूमधाम से हाथी घोड़े नगारे निशान के साथ जुलूस निकालकर शहर में घूमकर मन्दिरजी में जाना चाहिये। तीन प्रदक्षिणा देकर कुम्भ नैवेद्य के और फल के थाल भी भगवान के सामने धरना चाहिये और चैत्यवन्दन-विधि करनी चाहिये। ज्ञान की पुस्तक इसी जुलूस के साथ उपाश्रय में जाकर श्रीगुरु महाराज को अर्पित करना चाहिये। वहां गहूँली कर सोना रूपा नाणा से ज्ञान पूजा करनी चाहिये। गुरु वन्दन विधि करनी चाहिये। श्रीगुरु महाराज से मांगलिक सुन विसर्जन करना चाहिये। जितने तप करने वाले हों उतने कुम्भ होने चाहिये। यह तप गृहस्थ-श्रावकों को करने का है। जघन्य मध्यम और उत्कृष्ट एक वर्ष दो वर्ष और तीन वर्ष में यह तप होता है। श्रुत देवी की आराधना चौथे वर्ष में होती है। द्रव्य भाव भक्ति पूर्वक यथा शक्ति —इस तप के करने से भव्यात्माओं को—अक्षयनिधि—ज्ञान-धन की प्राप्ति इस लोक और परलोक में होती है। त्याग भावना से तपश्चर्या आदि से आत्म शुद्धि हो आत्मा परमात्मा बन जाता है।

श्री अक्षयनिधि–जिन–चैत्यवन्दन

।१।

ॐ अर्हं पद आतमा, परमातम पद धार।
गुण अनंत अक्षयनिधि, अक्षयनिधि दातार ॥१॥
उत्पाद व्यय ध्रुव गुणी, लोका लोक अनन्त।
सत्तत्वारथ — देशना, परमावें अरिहंत ॥२॥
जानें देखें ज्ञान से, ज्ञानी ज्ञान महान।
योगावचक भाव में, साधन सिद्धि निदान ॥३॥
दान शील तप भाव ये, भेद धरम के चार।
मेवा सुख मेवा मिले, अर्हं पद अवतार ॥४॥
सुख सागर भगवान जिन, हरि पूज्येश्वर भाव।
अक्षयनिधि विधि नित नमूँ, रोष बुद्धि गुण दाव ॥५॥

।२।

अक्षयनिधि अरिहंत पद, आतम गुण आगार।
अक्षयनिधि तप सुव्रती, वन्दूँ बारबार ॥१॥
तीर्थंकर तीरथपति, जगजन—तारणहार।
समवसरण भाखें प्रभु तप विधि वर विस्तार ॥२॥
अन्तराय—घाती करम, अन्त करण हित मार।
अक्षयनिधि तप साधना, साधक सुख दातार ॥३॥
आतम का गुण ज्ञान है, पुरुषारथ परधान।
ज्ञानी के सतसग में, प्रकटे ज्ञान महान ॥४॥

सुख सागर भगवान जिन, हरि पूजित अवतार ।
बोध बुद्धि हित हेतु से, वन्दूँ बार हजार ॥४॥

। ३ ।

(हरिगीति छन्द)

-१-

पर द्रव्य ममता भाव तज निज भाव अनुरागी हुए,
जो जीव के कल्याणकामी मुक्ति पथ पागी हुए ।
पुरुषार्थ पावन साधना बल कर्म मल हर्ता हुए,
हो वन्दना मेरी उन्हें जो तीर्थ के कर्ता हुए ॥

-२-

अतिशय अनत सुधामधुर वाणी सुना भव लोक को,
उपदेश दे सचत्व का फैला दिया आलोक को ।
अक्षयनिधि प्रभु ज्ञान घन मनि नीर उद्धर्ता हुए,
हो वन्दना मेरी उन्हें जो तीर्थ के कर्ता हुए ॥

-३-

निज घोर तप से विश्व को तप त्याग के आदर्श से,
परिचित किया प्रेरित किया निज आत्म के उत्कर्ष से ।
अक्षयनिधि तप योग से हरि पूज्य जग भर्ता हुए,
हो वन्दना मेरी उन्हें जो तीर्थ के कर्ता हुए ॥

। ४ ।

वर्त्तमान शासन-पति, वर्द्धमान-भगवान ।
अर्थ-रूप उपदेश दें, करें जगत कल्यान ॥१॥
सूत्र रूप गूँथे गुणी, श्री गणधर महाज्ञान ।
अविसंवादी शास्त्र ये प्रवचन पुण्य जहाज ॥२॥
प्रवचन-सारोद्धार में, वर्द्धित तप अधिकार ।
अक्षयनिधि तप साधना, साधक जन सुखकार ॥३॥
अक्षयनिधि श्रुत ज्ञान से, प्रकटे आतम-ज्ञान ।
आतम-ज्ञानी आतमा, सुख सागर भगवान ॥४॥
जिनहरि पूज्य सदा नमूँ, अक्षयनिधि तपधार ।
परमातम पद वन्दना, करूँ मिटे भव भार ॥५॥

। ५ ।

(वसन्ततिलका छन्द)

-१-

आत्मैक-शुद्धि-विधि-शोध-विधान-दक्ष,
स्फूर्जत्समाधि-शुभ-योगभृता ममक्षम् ।
प्रौढ़—प्रताप—जित—मोह-महा...

अर्हं

-३-

कर्मान्तकारि—पदवीं परमां दधान,
सिद्धिं सदाऽक्षयनिधिं गुरमां ददानम्।
दीव्यन्महोभर महोज्ज्वलता—विधान,
वन्दे तपो-विधि-मना विभु-वर्द्धमानम्॥

।१।

शासननायक सुखकरण, वर्धमान जिन भाण,
अहोनिश एहनी शिर वहुं, आण गुणमणिखाण।१।
ते जिनवरथी पामीया, त्रिपदी श्री गणधार,
आगम रचना बहुविध, अर्थ विचार अपार।२।
ते श्री श्रुतमां भाखियाए, तप बहुविध सुखकार,
श्री जिन आगम पामीने, साधे मुनि शिर भार।३।
सिद्धातवाणी सुणवा रसिक, श्रावक समकित धार,
इष्ट सिद्धि अर्थे करे, अक्षयनिधि तप सार।४।
तप तो सत्रमां अति घणा, साधे मुनिवर जेह,
अक्षय निधानने कारणे, श्रावक ने गुण गेह।५।
ते माटे भवि तप करोए, सर्व ऋद्धि मले सार,
विधिशुं एह आराधता, पामीजे भवपार।६।
श्री जिनवर पूजा करो, त्रिक शुद्धे त्रिकाल,
तेम वली श्रुतज्ञानना, भक्ति थई उजमाल।७।
पडिक्कमणा बे टकना, ब्रह्मचर्य ने धरीए,
ज्ञानीनी सेवा करी, सहेजे भवजल तरीए।८।

चैत्यवन्दन शुभ भावथी ए, स्तवन थोई नमकार,
श्रुतदेवी उपासना, धीरविजय हितकार ।६।

[इति श्री अक्षयनिधि तप चैत्यवन्दन—६]

अक्षयनिधि भाव स्तवन—१

(तर्ज—श्रीसम्भव जिन राजजी रे ताहरु अकल स्वरूप जिनवर पूजो०)

सिद्ध बुद्ध भव पारगा रे, परमातम-पद धार ।
आतम वन्दो रे ।
महावीर मगलमयी रे, अक्षयनिधि अवतार ।
आतम वन्दो रे ।
वन्दो वन्दो रे विनय विधि भाव, आतम वन्दो रे ॥ १ ॥
तीन काल तिहु लोक में रे, भावी भाव अशेष । आत० ।
ज्ञान गुणें करी देखतां रे, प्रभु सामान्य विशेष ।
आतम वन्दो रे, वन्दो वन्दो रे० ॥ २ ॥
निराकार सामान्य से रे, वर विशेष साकार । आत० ।
जानें देखें द्रव्य के रे, गुण पर्याय प्रकार ।
आतम वन्दो रे, वन्दो वन्दो रे० ॥ ३ ॥
ज्ञान दर्शन उपयोग मे रे, प्रभु परिणति अविराम । आत० ।
भेदा-भेद विचार में रे, क्रम-भावी परिणाम ।
आतम वन्दो रे, वन्दो वन्दो रे० ॥ ४ ॥

आतम का गुण ज्ञान है रे, ज्ञान सकल गुणसार। आत०।
कर्मावरण विहीनता रे, शक्ति व्यक्ति अविकार।
आतम वन्दो रे, वन्दो वन्दो रे० ॥ ५ ॥
कर्मों से संसार है रे, कर्मों से भवमार। आत०।
कर्म रहित होते प्रभु रे, भव्यातम आधार।
आतम वन्दो रे, वन्दो वन्दो रे० ॥ ६ ॥
श्री प्रभु पद अवलम्बने रे, गुण अक्षयनिधि भार। आत०।
प्रकटे विघटे विश्व में रे, कर्म जनित दुख दार।
आतम वन्दो रे, वन्दो वन्दो रे० ॥ ७ ॥
अक्षयनिधि गुण साधना रे, अक्षयनिधि तप धार। आत०।
अक्षयनिधि अरिहंत का रे, पद पावे निरधार।
आतम वन्दो रे, वन्दो वन्दो रे० ॥ ८ ॥
पर्वराज पर्यूषणा रे, पाये पुण्य संयोग। आत०।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल की रे, भाव शुद्धि सुख भोग।
आतम वन्दो रे, वन्दो वन्दो रे० ॥ ९ ॥
अक्षयनिधि विधि साधना रे, आराधक अवधान। आत०।
आतम परमातम बने रे, सुख–सागर भगवान।
आतम वन्दो रे, वन्दो वन्दो रे० ॥१०॥
जिनहरि–पूज्येश्वर प्रभु रे, सन्मति श्रीमहावीर। आत०।
गुण कवीन्द्र गाया करो रे, मानो धन तकदीर।
आतम वन्दो रे, वन्दो वन्दो रे० ॥११॥

अक्षयनिधि–विधि स्तवन—२

(तर्ज सीता माता की गोद में हनुमत डारी मुदड़ी)

सुखकर समवसरण में शासन–स्वामी देवें देशना ।
अमृत पदवी पावें भवि सुन, अमृत अधिकी देशना ॥ टेर ॥
आतम कर्त्ता कर्म निधान, भव में भटके दुःख प्रधान ।
धर्माराधन से सुख पावे, स्वामी देवें देशना ॥सु० १॥
दानादिक हैं चउविध धर्म, तप पद काटे कलुषित कर्म ।
आतम स्वभाव सुनिर्मल होवे, स्वामी देवें देशना ॥सु० २॥
आगम में तप विविध प्रकार, अक्षयनिधि तप सुख भंडार ।
आराधक अक्षयनिधि पावें, स्वामी देवें देशना ॥सु० ३॥
पर्यूषण संवत्सर पर्व, पनरह दिन पहिले हो अगर्व ।
अक्षयनिधि विधि साधक साधें, स्वामी देवें देशना ॥सु० ४॥
स्वस्तिक ज्ञान की पूजा करना, मंगल घट अक्षत से भरना ।
भक्ति द्रव्य-भाव चित धरना, स्वामी देवें देशना ॥सु० ५॥
आवश्यक प्रति दिन सुखकारा, पालो ब्रह्मचर्य अविकारा ।
आतम परमातम लयलाना, स्वामी देवें देशना ॥सु० ६॥
सुरभितधूप दशांग उदारा, दीपक ज्योतिक अखंडित धारा ।
सुरभित ज्योतिर्मय जीवन हो, स्वामी देवें देशना ॥सु० ७॥
चाढो विकसित सुन्दर फूल, चाढो सुमधुर फल बहुमूल ।
विकसित सुमधुर जीवन होवे, स्वामी देवें देशना ॥सु० ८॥

पूजा प्रभावना इकविध, करना देव मदन भी निच ।
हरना पाप-ताप समाग, स्वामी देवें देशना ॥मु० ६॥
प्यावो निज आतम गुण ज्ञान, उत्सव हृप गय रथ महान ।
बाजे गाजे प्रभु को भेटो, स्वामी देवें देशना ॥मु० १०॥
अक्षयनिधि तप एकामन से, पूरण करना तन मन घन से ।
गावें जिन हरि जय कारा, स्वामी देवें देशना ॥मु० ११॥

अक्षयनिधि तप स्तवन—३

(तर्ज—ओ पछी बावरिया)

परमातम गुण गाओ, तपस्वी तन-मन से ।
आतम में लय लाओ, तपस्वी तन-मन से ॥ टेर
अक्षयनिधि तप इच्छा रोधन,
करने से हो आतम शोधन,
कर्मों को दूर भगाओ, तपस्वी तन-मन से ॥ पर० १ ॥
जघन्य मध्यम यह उत्कृष्टा,
इक दो तीन बरस में पुष्टा,
निज गुण ज्ञान उपाओ, तपस्वी तन-मन से ॥ पर० २ ॥
श्रुत देवी को चौथे बरसे,
अक्षयनिधि-विधि साधन हरसे,
भाव अक्षयनिधि लाओ, तपसी तन-मन से ॥ पर० ३ ॥

निज निजका मंगल घट ठावो,
अक्षत धोवा नित्य भरावो,
उत्सव ठाठ रचाओ, तपस्वी तन–मन से ॥ पर० ४ ॥
समवसरण में, प्रभु पधराओ,
कल्पवृक्ष पूजा विरचाओ,
अखंड ज्योति जगाओ, तपस्वी तन–मन से ॥ पर० ५ ॥
धूप दशाग फूलों की माला,
भर भर फल नैवेद के थाला,
भक्ति में प्रेम लगाओ, तपस्वी तन–मन से ॥ पर० ६ ॥
पच शब्द वाजित्र बजाओ,
हय गय रथ सिंगार सजाओ,
शासन शोभा बढ़ाओ, तपस्वी तन–मन से ॥ पर० ७ ॥
पूजा और प्रभावना करके,
पुण्य भडारा अपना भरके,
जीवन में हुलसाओ, तपस्वी तन–मन से ॥ पर० ८ ॥
सामायक पडिकमणा करके,
देव वदन गुरु वदन करके,
रत्नत्रय प्रकटाओ, तपस्वी तन–मन से ॥ पर० ६ ॥
सोलह दिन तक तप आराधो,
सवत्सरी दिन
प्रभु गुण [illegible] ॥

अक्षयनिधि अक्षयनिधि बोले,
जिनहरिपूज्य वीर प्रभु बोलें,
जय जय नाद गुंजाओ, तपस्वी तन-मन से ॥ पर० ११॥

अक्षयनिधि-ध्यान स्तवन—४

(तर्ज—सरोता कहा भूल आये०)

ॐ अर्हं पद प्यारा।
हमारे मन भागया, ॐ अर्हं पद प्यारा। टेर।
ॐ अर्हं पद आतम अनुपम, गुण अक्षयनिधि धारा।
द्रव्य भाव अक्षयनिधि तप मे, है वह लक्ष हमारा। हमारे १।
पर पुदगल परिणति को तजकर, मिथ्या भाव मिटाया।
सम्यग्दर्शन करके आतम, आतम में ठहराया। हमारे. २।
ज्ञानादिक गुण पर्यायों का, आतम पिण्ड हमारा।
परद्रव्यों से जूदा अपना, स्व स्वभाव निरधारा। हमारे. ३।
स्व-स्वभाव में ही है मजा, लेश न पर परचारा।
पर में फस कर भवमे भटका, पाया आज किनारा। हमारे. ४।
हेय—ज्ञेय सारी दुनियां में, कोई नहीं हमारा।
आतम की आतम का है, यह उपादेय अविकारा। हमारे. ५।
द्रव्यालंबन भावमिमुख, वृत्ति आज हमारी।
साररूप अक्षयनिधि आतम, ध्यान विधि विस्तारी। हमारे. ६।

शुद्धातम वृद्धि अभिवृद्धि, सिद्धि समृद्धि विधाना।
समझ समझ कर आराधन यह, हमने मन में ठाना। हमारे. ७।
मन मंगल घट हुआ हमारा, देव गुरु सतसंगी।
गुण अक्षयनिधि भरते जीवन, पावन यह सरवंगी। हमारे ८।
कल्पसूत्र कल्पद्रुम जैसा, सुमनस् पूजा चंगी।
ज्ञानप्रदीप अखंडित ज्योति, धूप घटा गुण रंगी। हमारे ६।
वर्द्धमान आतम सुखसागर, शासन जय जय कारी।
परमगुरु भगवान शरण में, श्रद्धा बड़ी हमारी। हमारे १०।
जिन हरि पूज्य परम पुरुषोत्तम, अक्षयनिधि अधिकारी।
आतम परमातम पद पावें, कर्म कलंक निवारी। हमारे ११।

अक्षयनिधि तप–महिमा स्तवन–५

[दोहा]

श्रीफलवृद्धि पार्श्वजिन उठ प्रणमूं परभात।
उत्तम अक्षयनिधि तणो, भाखू वर अवदात॥ १॥
प्रवचन—सारोद्धार में, इसके भेद अनेक।
अक्षयनिधि–तप कीजिये, द्रव्य भाव सविवेक॥ २॥
अवराय को मेटता, अक्षयनिधि तप सार।
पुरुषोत्तम राजा लहे, अक्षयनिधि भण्डार॥ ३॥
पर्युषण पाखी प्रथम, तप आरम्भ विधान।
जिनवाणी बहुमान से, प्रकटे अक्षय निधान॥ ४।

ढाल—१

(तर्ज—आछे लाल)

जम्बू भरत प्रधान, पुरी विशाल अभिधान।
आछे लाल, शासन स्वामी समोसर्याजी ॥१॥
चेडा राजा नाम, श्रावक गुण अभिराम।
आछे लाल, श्रीजिनवन्दन आवियाजी ॥२॥
उपदेशें भगवान, दुर्लभ नरभव जान।
आछे लाल, धर्म कियां सुखपामियेजी ॥३॥
दान शीअल तप भाव, कीजें पुण्य प्रभाव।
आछे लाल, आतम गुण उजवालियेंजी ॥४॥
तप के भेद अनेक, कीजें जो सविवेक।
आछे लाल, कर्म निकाचित काटियेंजी ॥५॥
तामें अक्षयनिधि भेद, मायक हारे खेद।
आछे लाल, अक्षयनिधि प्रकटावियेंजी ॥६॥
अक्षयनिधि विधि याग, पुरुषोत्तम सुखभोग।
आछे लाल, पुण्यचरित्र अवधारियेंजी ॥७॥
पुरुषोत्तम कुण एह, पुण्य-सुपावन देह।
आछे लाल, पूछे चेटक राजियो जी ॥८॥

[दोहा]

फरमावेँ शासन पति, सुणजो चेटक राज।
पुरुषोत्तम पावन चरित, निज आतमहित काज॥

ढाल—२

(तर्ज—सोभागी जिनसुं लागो अविहड रङ्ग)

नमो रे नमो ज्ञान–धनी जिनचद ।
दमो रे दमो आतम इन्द्रिय वृन्द ॥ टेर ॥

भाविक भावे भावनाजी, श्री भद्रङ्कर सेठ ।
पुरुषोत्तम सेवक सुणेजी, उत्तम गुण जग जेठ ॥ नमो० १ ॥

भद्रङ्कर आराधतो जी, अक्षयनिधि तप सार ।
अनुचर अनुयायी हुओजी, भव्य भाव चितधार ॥ नमो० २ ॥

करण करावण जाणियेजी, अनुमोदन शुभभाव ।
तीनों एक समान है जी, त्रिकरण सफल स्वभाव ॥ नमो० ३ ॥

पुरुषोत्तम प्रवहण चढ्योजी, सेठ तणे व्यापार ।
दैवयोग से भजियोजी, प्रवहण सिन्धु मझार ॥ नमो० ४ ॥

ॐ अर्हं पद ध्यान में जी, पुरुषोत्तम लयलीन ।
सागर तट झटपट गयोजी, विकट सङ्कट भयो चीर ॥ नमो० ५ ॥

पद पद सपद पामियोजी, रतनपुरी को राज ।
सेवक वह स्वामी भयोजी, पुरुषोत्तम महाराज ॥ नमो० ६ ॥

पटरानी पदमावती जी, पुण्य तणे परिणाम ।
दपति भावे साधताजी, धरम अरथ अरु काम ॥ नमो० ७ ॥

द्रव्य भाव अक्षयनिधिजी, श्री पुरुषोत्तम भूप ।
सविधि साधन कीजियेंजी, अधिकारी अनुरूप ॥ नमो० ८ ॥

[दोहा]

रतनपुरी पावन करें, मुनिसुव्रत भगवान ।
पुरुषोत्तम वन्दन विधि, करे विनय बहुमान ॥

ढाल—३

(वर्ज -तीरथनी आसातना नवि करिए)

परमातम पद वन्दना नित करियें ।
हाँरे निज आतम आनन्द भरियें ॥
हाँरे भव सागर हेला तरियें ।
हाँरे काटी कर्मों का फन्द ॥ परमातम० टेर॥
उपदेशें सुव्रत प्रभु समो—सरणे ।
हाँरे भवि निर्मल अतः—करणे ॥
हाँरे धर्माराधन शुद्धाचरणे ।
हाँरे टारे दुःख द्वन्द ॥ परमातम० १ ॥
पुरुषोत्तम पूरव भवे अपराधी ।
हाँरे मुनि—निंदा धर्म—विराधी ॥
हाँरे यातें सेवक पदवी लाधी ।
हाँरे तोड़ो पाप—प्रबन्ध ॥ परमातम० २ ॥
अक्षयनिधि तप इह भवे अधिकारी ।
हाँरे अक्षयनिधि—सपति सारी ॥
हाँरे राज—भोग मिलें सुखकारी ।
हाँरे यह पुण्य प्रबन्ध ॥ परमातम० ३ ॥

आतम कर्त्ता कर्म का फल भोगी।
हारे भव में भटके जड़ जोगी॥
हारे निर्वाण लहे उपयोगी।
हारे होय शिव सुख—कन्द॥ परमातम० ४॥

श्रीमुनि–सुव्रत–नाथ का अनुयायी।
हारे पुरुषोत्तम पुण्य कमाई॥
हारे निज आतम ज्योति जगाई।
हारे पावे परमानन्द॥ परमातम० ५॥

ज्ञानत्र यनिधि साधना विधि करियें।
हारे अज्ञान दशा परिहरियें॥
हारे परमातम पदवी वरियें।
हारे छोड़ी छल—छन्द॥ परमातम० ६॥

शासन स्वामी वीरजी फरमाया।
हारे निज आगम में गुण गाया॥
हारे भव्यातमा के मन भाया।
हारे कर आश्रव बन्द॥ परमातम० ७॥

द्रव्य भाव भक्ति भरूँ निज घटमें।
हारे अक्षत भरूँ मगल घटमें॥
हारे धरूँ धीरज मैं सकट मे।
हारे ध्याऊँ जिनचद॥

कलश

इम देव वन्दन ज्ञान-ध्याने पा-तार निफन्दनं,
अक्षयनिधि तप साधन जीवन परम आनन्दनम् ।
सुख सिन्धु पर भगवान जिनहरि पूज्य पावन शासन,
वन्दूँ सदा मैं भक्ति से परमात्म गुण सुविकासनम ॥

॥ इति अक्षयनिधि स्तवन—५ ॥

अक्षय-निधि-तप-स्तवन—१५

(तर्ज—झंडा ऊंचा रहे हमारा)

अक्षय-निधि तप आनदकारी
घर शुभ भाव करो नर नारी । टेर ।
अक्षय निधि पावो सुर नर की ।
अंत लहो ऋद्धि शिव पुर की । अ. १ ।
पक्ष समण सवत्सरी रहती,
बहु विध तप की नदियां वहती । अ १ ।
भव दुख दूर करे जो जग में,
वह श्रुत-ज्ञान आराधन इसमें । अ ३ ।
प्रेम भक्ति से प्रभु की पूजा,
वीतराग सम देव न दूजा । अ. ४ ।
पाप-आलोचन देव-वन्दन से,
आराधो तप पावन मन से । अ. ५ ।

नमो नाणस्स जाप जपीजे ,
खमासमण कायोत्सर्ग कीजे । अ. ६ ।
जघन्य पांच मध्य में वीस ,
एकावन उत्कृष्ट जगीश । अ. ७ ।
स्वर्ग रजत मणि मृत्तिका सार ,
मगल कलश भरीजे उदार । अ. ८ ।
रजत अक्षत पुगी फल सुन्दर ,
नित-नित पसली डालो अन्दर । अ ६ ।
जिनपति निकट में स्थापन कीजें ,
दक्षिण ज्योति अखड धरीजे । अ.१० ।
वायें कल्प सूत्र पूजी जे ,
पुष्प माल कुम कठ ठवीजें । अ. १२।
ईर्ष्या द्वेष कषाय निवारे ,
तो ए तप मन वांछित सारे । अ १३ ।
रात्री जागरण वर घोड़ो कीजे ,
सघ कलश मदिर में ठवीजें । अ. १३ ।
सुरा मय दोय सहस चउ वर्षे ,
अक्षयनिधि तप किया है हर्षे । अ. १४ ।
पुण्य से सुवरण समय मिला है ,
भविजन 'कोमल' हृदय खिला है। अ. १५ ।

(लागो लागो ने राज मोंघा मूला मोती-ए देशी)

तपवर कीजे रे, अक्षयनिधि अभिधाने,
सुख भर लीजे रे दिन दिन चढ़ते वाने-ए आकणी
पर्व पजुसण पर्व शिरोमणि, जे श्री पर्व कहाय,
मास पास छठ दसम दुवालस, तप पण ए दिन थाय. १ त०
पण अक्षयनिधि पर्व पजुसन, फेरो कहे जिनभाण;
श्रावण वदि चोथे आरंभी, सवच्छरि परिमाण. २ त०
ए तप करता सर्व ऋद्धि वरे, पग पग प्रगटे निधान,
अनुक्रमे पामे तेह परम पद, सान्वयी नाम प्रधान ३ त०
परमत्सरथी कर्म बधाणु तेणे पामी दु:खजाल,
ए तप करतां ते पूरवनु, कर्म थयु विसराल ४ त०
ज्ञानपूजा श्रुतदेवी काउस्सग्ग, स्वस्तिक अति सोहावे;
सोवन कुम्भ जडित निज शक्ति, सम्पूरण क्रमे थावे. ५ त०
जघन्य मध्यम उत्कृष्टथी करीए, इण दोय तीन वरीस,
वरस चोथे श्रुतदेवीनिमित्त, ए तप वीशवावीश ६ त०
एणे अनुसारे ज्ञानतणुं वर, गरणु गणीए उदार;
आवश्यकादि करणी सयुत, करता लहे भवपार ७ त०
इहभर परभव दोष आशमा, रहित करो भवि प्राणी,
जे पर पद्‌गल ग्रहण न करवु, ते तप कहे वरनाणी. ८ त०
रातिजगा पूजा परभावना, हय गय शणगारीजे,
पारणा दिन पच शब्दे वाजे, वाजते पधरावीजे. ६ त०

चैत्य विशाल होय तिहा आगो, प्रदक्षिणा वली दीजे,
कु म विविध नैवेद्य सघाते, प्रभु आगल ढोइजे १० त०
राधनपुरे श्रे तप सुणी बहु जण, थया उजमाल तप काज,
श्रेह मुख्य मडाण श्रोछवना, मसालीया देवराज. ११ त०
सवत अढार तेंतालीश वरसे, श्रे तप बहु भवि कीधो,
श्री जिन उत्तम पाद पसाये, पद्मविजय फल लीधो. १२ त०

— - ॐ) —

अक्षयनिधि-स्तुति—१

—१—

ॐ ह्रीं ऐं बीजाक्षर युत पावन मत्र,
नाणस्स नमो नित ध्यावो गुरु परतन्त्र ।
गुरु पारतन्त्र्य में हो स्वतत्रता योग,
अक्षयनिधि आतम पावें शिव सुख भोग ॥

—२—

ज्ञानावरणादि घाति-करम कर अत,
सुर-रचित सिंहासन राजें श्री अरिहत ।
पुण्योदय—प्राणी पावें दर्शन योग,
अक्षयनिधि आतम पावें शिव-सुख भोग ॥

—३—

जिन आगम पूजा प्रकटे आगम ज्ञान ।
मगल घट पूरण अक्षत—गुण परधान ॥

हो द्रव्य–भाव से विधि सद्गु सयोग,
अक्षयनिधि आतम पावें शिव सुख भोग ॥

—४—

शासन परभावना, प्रभु पूजा अधिकारी,
पर्यूषण पाखी—एकासन तप धारी।
रक्षक हों उनके "सुर-गणपति हरि" लोग,
अक्षयनिधि आतम पावें शिव-सुख भोग ॥

अक्षयनिधि स्तुति—२

—१—

सवत्सरी अन्तिम सोलह दिन अविकारी,
अक्षयनिधि तप विधि जग में जय जय कारी।
अर्हं पद ध्याने ज्ञान सुधारस पीन,
आतम परमातम होवें भाव अदीन ॥

—२—

पुरुषोत्तम–पद्मावती प्रमुख नर–नारी,
अक्षयनिधि साधन जग ज्योति विसतारी।
तप कम तपावे पाप खपावे भारी,
सिद्धातम होवें जाउ मैं बलिहारी ॥

—३—

आगम में गाया अक्षयनिधि अधिकार,
मुनि सुव्रत स्वामी चरण–शरण स्वीकार।

पुरुषोत्तम, पुरुषोत्तम पद पाया धन्य,
आगम आराधु तन-मन-भाव अनन्य ॥

—४—

अक्षयनिधि तप से अंतराय हो दूर,
सुर-"गणनायक हरि" देवें सुख भरपूर ।
अक्षयनिधि आतम-बुद्धि-शुद्धि अतिरेक,
श्रुतदेवी देवें शुभ-गुण पुण्य विवेक ॥

अक्षयनिधि-स्तुति—२

—१—

शासन-पति राजें समवसरण अभिराम,
आगम उपदेशें भव्य जीव विशराम ।
मंगल घट अक्षत गुण पूरण परिणाम,
सुविहित निधि पूजा गाऊँ प्रभु गुण ग्राम ॥

—२—

ज्ञानावरणी से रुका हमारा ज्ञान,
अज्ञान मिटावे अखंड ज्योति ध्यान ।
निज आतम ध्याने प्रकटे पुण्य प्रकाश,
ध्याउ परमातम मनमें धर विशराम ॥

—३—

प्रवचन में भाख्यो अक्षयनिधि आरंभ,
पर्यूषण पहिले पाळी दिन निर्दम्भ ।

पूजा-परमाननी एकासन तप व्रत,
उपजामी होकर पाउ ज्ञान अनन्त ॥

—४—

तप खींचे होवें सदा सहायक देव—
'गणपतिहरि' वाछित फल देवें स्वयमेव ।
अक्षयनिधि तप से अक्षयनिधि हो जाय,
श्रुत-सानिध देवें श्री श्रुतदेवी माय ॥

अक्षयनिधि-स्तुति—४

[मालिनी छन्द]

—१—

अक्खयनिहि-विहाण सव्व माव प्पहाण,
जिणवर-उवइट्ठं भव्व—जीवाण इट्ठ ।
कय-कुगइ-निरोह पुण्ण-रुक्ख-प्परोह,
सरह पणव-मंत अप्पणो नाणवंत ॥

—२—

वियलिय-भवजाल नाणरूव तिकाल,
पयडिय-गुणमाल पुण्ण-रूव विसाल ।
हय-कुमइ-कुचाल, मोह-सम्मोह गाल,
सरह निय-कपाल मिद्धजोई सकाल ॥

— ३ —

पणर–सहिय–माया–लकिय हो अमाया,
पवयण–सुय बीय माणसे नाणगीय।
तवगुण—गय–पाव सासण सप्पभाव,
सग्ह सरह सारं होंतु ससार पार॥

— ४ —

अक्खयनिहि तवम्मि–वकासणोवासगम्मि,
जिणवर–पय–पूआ–दव्व–भाव–प्पभूआ।
जणयइ बहु तुएण संपय सोक्ख पुएणं
"जिणहरिं" बहु माणं, जायए अप्पमाणं॥

अक्षयनिधि-स्तुति—५

[वसन्त तिलका]

-१-

अर्हं नमः प्रथमतो हृदये निधाय,
दिव्य तपोऽक्षयनिधान मयो विधाय।
प्राज्य सुराज्य–सुख मत्र परत्र लोके,
स्वर्गापवर्ग—जनित सुजना भजन्ते॥

-२-

ज्योतिः—स्वरूप मपि समयतीह तेषा,
येषां मनोऽक्षयनिधि-व्रत-मानधानम्।

श्रीसुव्रतामिधविभोः पुरुषोत्तमेन,
प्राप्त पुराहमपि तत्सतत श्रयामि ॥

-३-

जैनागमो जयतु यत्र पवित्र—मात्र,
पात्र तपोऽक्षयनिधेःप्रथित प्रशस्तम् ।
इच्छा-सुरोधन-विवेक-दयैक-बुद्धि—
प्रौढात्मनां भवतु तच्च सदात्मशुद्‌ध्यै ॥

-४-

देवी श्रुतस्य सुखमागर-वृद्धि-हेतु-
र्भूयात्सदा भगवदङ्घ्रिकृताश्रितानाम् ।
पाप-प्रणाश-चतुरा हरिपूज्य-भावा,
श्रीभारती भगवतीह महाप्रभावा ॥

अक्षयनिधि तप में ज्ञान-पद वंदन

(दूहा)

पर्यूषण पाखी प्रथम, तप श्रीअक्षय निधान ।
आराधन कर भाव से, वन्दूँ ज्ञान महान ॥ १ ॥
अनुष्ठान अमृत—गुणी, अक्षयनिधि विधि ज्ञान ।
चढ़ समकित गुण ठाण से, वन्दुँ ज्ञान महान ॥ २ ॥
हेय—ज्ञेय ससार है, उपादेय स्वज्ञान ।
तीन भाव परकाश कर, वन्दू ज्ञान महान ॥ ३ ॥

समझावें छहद्रव्य के, गुण–पर्याय–वितान ।
रूपा–रूपी भाव में, वन्दू ज्ञान महान ॥ ४ ॥
परमारथ की देशना, भाखें श्री भगवान ।
अधिकारी आराधते, वन्दू ज्ञान महान ॥ ५ ॥
समकित दृष्टि जीव को, प्रकटे सम्यक् ज्ञान ।
तसफल विरति धारकर, वन्दू ज्ञान महान ॥ ६ ॥
त्रस थावर जग जीव को, तरतम भाव निदान ।
क्षयोपशम प्रकटित पुनित वन्दू ज्ञान महान ॥७॥
मनन रूप मति ज्ञान से, प्रकटे आतम ज्ञान ।
हेतु हेतुमद् भाव से, वन्दू ज्ञान महान ॥ ८ ॥
इन्द्रिय मन संज्ञा जनित, जीवन में परधान ।
लक्षण आतम द्रव्य का, वन्दू ज्ञान महान ॥ ९ ॥
मति पूर्वक श्रुत ज्ञान है, पावन नय परमाण ।
सांगोपांग अनेक [illegible] न महान ॥१०
अरथे अ[illegible] ों की खान
सूत्रे [illegible] ॥११
स्वर [illegible] ।
आतम [illegible] २॥
श्रुत [illegible]

श्रवण क्रिया श्रुत लाभ हो, टरे पाप अभिमान ।
पाप गया सुख ऊपने, वन्दू ज्ञान महान ॥१४॥
त्रिपदी तिरवेनी जहां, हरे मोह अज्ञान ।
जीवन को पावन करे, वन्दू ज्ञान महान ॥१५॥
श्रीश्रुत ज्ञानी केवली, केवल ज्ञान समान ।
जड़ चेतन भासन करे, वन्दूं ज्ञान महान ॥१६॥
मर्यादा–अवधि विषय, रूपि–पदारथ मान ।
देश थकी प्रत्यक्ष यह, वन्दू ज्ञान महान ॥१७॥
सञ्ज्ञी जीव विशेष के, जानें मन उपान ।
मन–पर्यायी भाव मय, वन्दूं ज्ञान महान ॥१८॥
लोका–लोक विलोकते, परतिख अव्यवधान ।
क्षायिक भावे वरतते, वन्दू ज्ञान महान ॥१९॥
सुख सागर ससार में, वर्द्धमान भगवान ।
अविसवादी आतमा, वन्दूं ज्ञान महान ॥२०॥
'अक्षयनिधि सुव्रत विधि, बोध बुद्धि अवधान ।
जिन हरि पूजित तीर्थ में, वन्दू ज्ञान महान ॥२१॥

ऊपर लिखे दूहे श्रीश्रुत ज्ञान की स्थापना को प्रदक्षिणा करते हुए—खमासमण पूर्वक बोलने चाहिए।

❀ दैनिक-विधि ❀

इर्यावही करके इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अक्षयनिधि-तप चैत्यवन्दन करूं इच्छं कह कर—चैत्यवंदन जयवीयराय पर्यंत कहे। बाद सुय देवयाए करेमिकाउस्सग्गं—अन्नथ एक नवकार का काउस्सग्ग। नमोऽर्हत् कह कर—स्तुति कहे—

सुयदेवया भगवइ, नाणा वरणीय कम्म संघाय।
तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुयसायरे भत्ति ॥ १ ॥

बाद एकासन का प्रत्याख्यान करना चाहिए। नवपद पूजा में से ज्ञान पद पूजा पढे—

श्रीज्ञानपद–पूजा

[दूहा]

सप्तम पद श्री ज्ञान नो, सिद्ध चक्र तप माहिं।
आराधीजे शुभ मने, दिन दिन अधिक उछाहिं ॥१॥

श्लोक

अन्नाण संमोह तमोहरस्स, नमो नमो नाण दिवायरस्स।
पचप्पयारस्सु वगारगस्स, सत्ताण सव्वत्थ पयासगस्स ।१।
हुवे जेह थी सर्व अज्ञान रोधो जिनाधीश्वर प्रोक्त अर्थावबोधो ।१।
मति आदि पंच प्रकारप्रसिद्धो, जगद् भासने सर्वदेवाविरुद्धो ।२।
यदीय प्रभावे सुभक्ष्य अभक्ष्य, अपेयं सुपेय सुकृत्य अकृत्य।
जेणे जाणिये लोकमध्ये सुनाणं, सदा मे विशुद्ध तदेव प्रमाणं ।३।

ढाल

भव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रकाशक भावेजी ।
परजाय धर्म अनतता, भेदा-भेद स्वभावेजी ॥

[उल्लाला]

जे मुख्य परिणति सकल ज्ञायक बोध भाव विलच्छना ।
मति आदि पञ्च प्रकार निर्मल सिद्ध साधन लच्छना ॥
स्याद्वाद संगी तत्वरंगी प्रथम भेदा—भेदता ।
सविकल्प ने अविकल्प वस्तु सकल संशय छेदता ॥

ढाल—(असाउरी)

भविका सिद्धचक्र पद वन्दो—॥ टेर ॥
भक्ष्या-भक्ष्य न जे विण लहिये, पेय अपेय विचार ।
कृत्य अकृत्य न जे विण लहिये, ज्ञान ते सकल आधार रे ।भ० १।
प्रथम ज्ञानने पछी अहिंसा, श्री सिद्धांते भाख्यु ।
ज्ञानने वन्दो ज्ञान मनिंदो, ज्ञानीये शिव सुख चाख्यु रे ।भ०२।
सकल क्रियानु मूल जे श्रद्धा तेहनु मूल जे कहिये ।
तेह ज्ञान नित नित वदीजे, ते विण कहो किम रहिये रे ।भ०३।
पाँच ज्ञान मांहि जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक जेह ।
दीपक परे त्रिभुवन उपकारी, वलि जिम रवि शशि मेह रे ।भ०४।
लोक उर्द्ध अध तिर्यग् ज्योतिष, वैमानिक ने सिद्धि ।
लोका-लोक प्रकट सवि जेह थी ते ज्ञाने मुझ शुद्धि रे

ढाल

ज्ञानावरणि जे कर्म छे, चयउपशम तम थाये रे ।
तो हुए एहिज आतमा, ज्ञाने अबोधता जाये रे ॥
वीर जिनेश्वर उपदिशे, तुमे सांभलजो चित लाईरे ।
आतम ध्याने आतमा, रिद्ध मिले सहु आई रे ॥वी.॥

मंत्र——ॐ ह्री अर्हं परमात्मने अनंतानंत ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय अक्षयनिधि ज्ञानपदधारकाय श्री जिनेन्द्राय जल चंदनं पुष्पं धूप दीप गंध अक्षत नैवेद्य यजामहे स्वाहा ।

इस मंत्र को पढ़कर इन द्रव्यों को चढ़ावें । वासक्षेप पूजा करें । सोना रूपा नाणा चढ़ावें । ज्ञान की पुस्तकें लिखावें । ज्ञान की पुस्तकें छपावें । पढ़ने वालों की भक्ति करें ।

पीछे अक्षत, सुपारी, रूपानाणा आदि से धोबा (पसली) भर कर नीचे लिखी स्तुतियां बोलते हुए अक्षतादि कुंभ कलश में डालें ।

स्तुति

-१-

बोधागाध सुपदपदवी—नीरपूराभिराम,
जीवाहिंसा–विरललहरी—संगमागाहदेहं;
चूलावेलं गुरुगम मणिसंकुलं दूर पारं,
सारं वीरागम जल निधिं सादरं साधु सेवे ॥१॥

-७-

ज्ञान समो को धन नहीं, समता समो नहीं सुख।
जीवित सम आशा नहीं, लोभ समो नहीं दुख ॥२॥
इत्यादि श्रुत ज्ञान की स्तुति बोली जा सकती है।

जैसे—

समकित श्रद्धावतने, उपन्यो ज्ञान प्रकाश।
प्रणमु पदकजतेहना, भावधरी उल्लास ॥३॥

पार्श्वनाथ जिन पंच कल्याणक स्तवन

(तर्ज—आज आनन्द बहार रे)

पार्श्वनाथ भगवान रे, प्रभु वन्दो आनद से;
वन्दो आणद से पूजो प्रेम से।
करलो आतम कल्याण रे। प्र०१।

अश्वसेन नृप नदन जगगुरु, पुरुषोत्तम प्रधान रे। प्र०२।
पोष वदी दशमी दिन जन्मे, मति श्रुत अवधि ज्ञान रे। प्र०३।
सुरपति नरपति सब मिल आवे, गावे जिन गुण गान रे। प्र०४।
कृष्ण एकादशी सयम धारे, देई सवत्सरी दान रे। प्र०५।
चैत कृष्ण की चौथ को उत्तम, प्रगटा केवल ज्ञान रे। प्र०६।
समवसरण में भव्य जनों को, देवे धर्म विज्ञान रे। प्र०७।
श्रावण सुद अष्टमी को प्रभु का, सम्मेत शिखर निर्वाण रे। प्र.८।
वामादेवी के प्रभु दुलारे, प्रभावति के प्राण रे। प्र०९॥

महा उपद्रव कमठासु' का, दूर किया अभिमान रे। प्र०१०।
'सुवरण' यत्न सफल बनें मेरा, देवें 'विचक्षण' ज्ञान रे। प्र०११।

वीर विरह

(तर्ज—मेरे बिछुड़े हुए स्वामिन्)

हे वीर प्रभो स्वामिन् तेरी याद सताएँ।
मेरे मोक्ष गये प्रभुवर तेरी याद सताएँ॥
तुम हमसे दूर बसे जा कौन खबरिया सुनाएँ॥ टेर॥
सात राज ऊँचा है शिवपुर, वहां पर है प्रभुवर तेरा घर।
कर्म बोझ से दबे हुए हम, तुम तक कैसे आएँ। हे वीर.१।
कर्मराज मोहे नाच नचावे, तुम बिन मुझको कौन बचाए।
भव सागर में डूबत नैया, हा ! अब कौन तिराए। हे वीर २।
काती अम्मावस जब आती, मेरे दिल को खूब रुलाती।
सुख सदेश तुम्हारा लेकर, नहीं कोई पतिया पंचाए। हे वीर.३।
तुम दर्शन को दिल रोता है, हृदय अपना स्थल खोता है।
नहीं हमको चैन सुनो प्रभु बैन, अँखिया आंसूँ बहाएँ। हे वीर.४।
"सुवर्ण" दिन कब होगा मेरा, पाऊँ तुम चरणों में बसेरा।
व्यथित 'विचक्षण' हृदय पुकारे, पामम जल्दी बुलाएँ। हे वीर.५।

अनुनय

महावीर के हम सिपाही बनेंगे,
कर्मों की सेवा से ख़ूब ...

कैदी आतम को मुक्त करेंगे,
विजय पताका शीघ्र वरेंगे। महा० ।१।
लाख चौरासी के चक्कर फिरते,
नाना विध भव नाटक करते।
काल अनन्तानन्त गए हैं,
दु:ख अनन्तानन्त सहे हैं। महा० ।२।
हो अज्ञान मिथ्यात्व के वश में,
मग्न रमा पर पुद्गल रस में।
मोह हिंचोले निज को झुलाया,
आतम स्वभाव का भान भुलाया महा. ।३।
सुवरण प्रवचन सुन मति जागी,
यत्न से शिव सुख की लय लागी।
विज्ञान विचक्षण शरण तुम्हारे,
भव बंधन प्रभो काटो हमारे। महा० ।४।

वीर प्रभु विनती

(तर्ज दर्शन की प्यासी हमारी अंखियाँ)

प्रभु वीर सुनो मेरी विनतिया।
अब दूर करो दुःख की बतियां ॥ टे० ॥
भव भ्रमण कर कर्म बढ़ाये।
उनके अति दारूण फल चखिया। प्रभु ॥१॥

लक्ष चौरसी योनि में नाचत ।
भव भव नव नव वेष सजिया । प्रभु० ॥२॥
कर्म राज के कारागृह में ।
बीत गई हैं अनन्त सदियां । प्रभु० ॥३॥
मोह मदिरा के पान से स्वामिन् ।
मेरी बिगड़ गई सारी मतिया । प्रभु० ॥४॥
मनल कषाय विषय अरि अनहद ।
बोझा मेरे सिर पर लदिया । प्रभु० ॥५॥
देख दशा दयनीय प्रभो मम ।
बहा दो करुणा की नदियां । प्रभु० ॥६॥
दुख सागर से अनन्त उबारे ।
अपराधी भी किये सुखिया । प्रभु० ॥७॥
मुझ पामर को क्यों भुलाया ।
पार करो अब ग्रहो बहियां । प्रभु० ॥८॥
हो सर्वज्ञ सर्वदर्शी तुम ।
त्रिभुवन करे नित कीरतियां । प्रभु० ॥९॥
पाया तुम सा नाथ निराला ।
दूर करो मेरी दुर्मतियां । प्रभु० ॥१०॥
"सुवरण" ज्ञान "विचक्षणता" दो ।
नाश करूँ जीवन बदियां । प्रभु० ॥११॥

मन की दशा

मेरा मन वश नहीं है महावीर ? कैसे करूँ तदवीर । मेरा ॥टे.॥
इसकी तेजी चाल के आगे, पानी भरत समीर । मेरा. ॥१॥
पल भर तुम स्मरण में बैठू, तो मारे यह तीर । मेरा. ॥२॥
धर्म क्रिया उपयोग शून्य है, राम रटे ज्यों कीर । मेरा. ॥३॥
नहीं खावे नहीं भोगे फिर भी, जकड़े कर्म जंजीर । मेरा ॥४॥
इधर उधर भटकत निशिवासर पल नहीं धारत धीर । मेरा ॥५॥
जन्म मरणमय भव झंझट में, हूँ अब खूब अधीर । मेरा ॥६॥
जगत जेल दारुण दु:ख ममभयो, याते हूँ दिल गीर । मेरा. ॥७॥
पर यह मन दुश्मन नहीं समझे, कैसे धरूँ मैं धीर । मेरा ॥८॥
'पुण्य' से 'सुवर्ण' दर्शन तेरा पाया घन तकदीर । मेरा ॥९॥
कर करुणा शुभ यत्न से स्वामी, हरो 'विचक्षण' पीर । मेरा. ॥१०॥

कार्तिक पूर्णिमा स्तवन

(तर्ज—जिया बेकरार है)

तीरथ तारण हार है सिद्धाचल सुखकार है,
कार्तिक पुनम पर्व महोदय जगमें जय जयकार है । टेर ।
तीरथ री रज के कण कण पे, सिद्ध अनन्ते हो गये २,
भाव विभोर हो साधु अनते, अनशन लेकर सो गये हो २,
तीर्थों का शृङ्गार है आनंद मंगलकार है. कार्तिक पूनम पर्व ॥१॥
आदीश्वर के पौत राजऋषियों, द्राविड वारिखिल्ल हो २,
उनके तपस्वी ध्यान ध्यान से,खपादिया कर्म चिखिल्ल हो २,

सुन तीर्थ महिमा अपार है, किया यात्रा का विचार है। कार्तिक।२।
चौमासा कर सिद्धाचल पर, किया अभिग्रह सार हो २,
केवल ज्ञान प्रगट होगा तब ही लेंगे हम आहार हो २,
भावों का बाजार है, हो गया तेज अपार है। कार्तिक०॥३॥
तप संयम गुण श्रेणी चढ़ते, कार्तिक पुनम आई हो २,
दश कोटि मुनि संग में यहां पर, आतम लक्ष्मी पाई हो २,
कर्म जो अष्ट प्रकार है, मेटा सर्व विकार है। कातिक०॥४॥
सुख सागर भगवान हरि पूजित, आनंदमय सिद्धाचल हो २,
दिव्य कवीन्द्र सुकीर्तित 'सुवरण' सम करे आतम निर्मल हो २,
'विचक्षण' परमाधार है, करता भव से पार है। कातिक०॥५॥

केसरिया जिन स्तवन

(तर्ज—लहेरदार बीछुड़ो)

नाथ तुम्हारे दर्शन को हम आये हो सांवरिया दर्शन आनदकारी।
चरण शरण प्रभु पाकर हम हर्षाएं हो सांवरिया दर्शन०। टेर।
माता मरुदेवी के नन्दा, नाश किया दुनिया का फंदा।
इन्द्र चन्द्र नरेन्द्र जगत गुण गाये हो सांवरिया। दर्शन०।१।
धूलेवा धणी रिषभदेव का, जगमें बाज रहा है डंका।
राजा राणा सब ही शीष झुकाएं हो सांवरिया। दर्शन०।२।
देश देश के यात्री आवे, दर्शन कर आमोद बढ़ावे।
भक्ति प्रेम से केसर कुसुम चढ़ाये हो सांवरिया। दर्शन०।३।
'पुण्य' से 'सुवरण' मंडल आया, यत्न से अनुपम दर्शन पाया।
हैं 'निज्ञान' 'विचक्षण' शरण निभाएँ हो सांवरिया। दर्शन०।४।

प्रभु प्रार्थना

(तर्ज – यहा बदला वफा कर)

जगत सिरताज हे स्वामिन् ? मेरी फरियाद सुन लेना।
पड़ा हू कर्म फंदों में मुझे आजाद कर देना। टेर।
अनन्ते काल बीते हैं प्रभो ? दुःख दाह में जलते।
सहा जाता नहीं अबतो दया जल से बुझा देना। ज०१।
नहीं दुनिया मे कोई अपना, सहायक हो जो संकट में।
तुँही एक स्वार्थ बिन भगवन, बचाता सबको झंझट से। ज०२।
मैं कर कर आरजूँ थाका, मात सुत तात सब जन से।
हार कर आज आया हू, शरण लेन को चरनन में। ज०३।
मोह की मार खा खा कर, बना हू मैं अति दुर्बल।
आतम शक्ति जगा करके, हटा दो मोह का दल बल। ज०४।
पड़ी यह नाव खाती है, बिना पतवार झक झोले।
मोह आंधी के धक्के से, भँवर भव बीच में डोले। ज०५।
प्रभो सुख सिन्धु हो भगवन ! त्रिलोकी नाथ हरि पूजित।
पूर्ण आनद के भोगी, कवीन्द्रों से हो तुम कीर्तित। ज०६।
बनाओ स्वर्ण सम निर्मल, यत्न से नाथ जीवन को।
विशद 'विज्ञान' का दे दान, करो उन्नत 'विचक्षण' को। ज०७।

महावीर स्वामी की पालणो

(राग ख्याल की)

झूल रयोजी रतने पालणे मुक्ति को वामी॥ टेर॥

चत्री कुन्ड में जन्म हुवा है, सिद्धारथ के लाल।
माता आपकी त्रिसला रानी, वीर प्रभु है नाम ॥ १ ॥
देवलोक की घन्टा सुनकर, इन्द्र इन्द्राणी आवे।
चैत सुदी तेरस दिन जन्म्या, आनद मगल गावे ॥ २ ॥
देवी देवता सब मिल करके, मेरु शिखर ले जावे
छोटा बालक जान प्रभू को, मनमें शङ्का लावे ॥ ३ ॥
इन्द्र को शङ्का जान प्रभूजी, मेरु गिरी कम्पावे।
खीर समुन्द्र से जल भर लावे, प्रभू को नवन करावे ॥ ४ ॥
सोना रूपा जड़ियो पालणो, मोतायन की लड़ भारी।
झूमक लागे अति जो सुन्दर, हरक २ नर नारी ॥ ५ ॥
कोटा संघ की वीनती जी, आप सुनो महाराज।
दास सेवक यूँ कहम कोई, भवजल पार उतार ॥ ६ ॥

गहूंली

मारा गुरनी सान की मोहनी सुरत मारे मन भाइ जी ।।टेर।।
अनुपम श्रीजी विचक्षण श्रीजी निपूणा श्रीजी जानो जी ॥१॥
विनीता श्रीजी प्रमाश्रीजी प्रवीण श्रीजी पहिचानो जी ॥२॥
चन्द्रप्रभानी मनोहर श्रीजी सुरजना श्रीजी भारी जी ॥३॥
मजुला श्रीजी ठाणा १० हुवा महीमा अपरपारी ॥४॥

धन सेठाणी साथ ने जो गुरनी म्हार ने लाया ॥५॥
धन भाग है कोटा सघ को आप गुणवन्त पधार्या जी ॥६॥
केइ वैनी अर्जनी भाई दर्शन करने आवे जी ॥७॥
अमृत ज्यु वाणी वर्षाते महिमा कही न जावे जी ॥८॥
स० २०१३ का चौमासा आप कोटा मे कीना जी ॥९॥
अक्षय निधि की महीमा सुनके तपस्या का मच गया ठाठ जी ॥१०॥
आप को वाणी मीठी लागे म्हाने छोड़ मत जाजो जी ॥११॥
दास चिन्तामन अर्ज करे है सकट म्हारो टारो जी ॥१२॥
भुल होइमो माफ करो गुरु जय २ शब्द उचारू जी ॥१३॥

विनती

इम कोटा मॉंही कीयो चौमासो गुरनी साथ ने ।
अनुपम श्रीजी विचक्षण श्रीजी निपुणाश्रीजी जानो ।
विनीता श्रीजी प्रभार्थीजी प्रवीणश्रीजी पहिचानो जी ।इम.।१।
चन्द्रप्रभाजी मनोहरश्रीजी सुरजना श्रीजी मानो ।
मजुलाश्रीजी ठाणा १० हुवा बुद्धि से पहिचानो जी ।इम ।२।
गुण सतावीस सोहे आपका पच महाव्रत धारा ।
पाच सुमति और तीनों गुप्ति सेवे, चार कषाय निवारी जी ।इम.।३।
दस विध यति धर्म्म की पाले, तेरे काठिया टाले ।
बारह परिसह जितीयामजी, दोष बयालीस टाले जी। इम ।४।

मद आठो को जितीयामजी, सयम सतरा पाले ।
बारा भावना शुद्ध धर्म सु जैन धर्म्म प्रतो पाले जी । इस ।५।
पड़िक्रमणो दोय टक करीने, जैन आचार बतावे ।
पैतालीस आगम की बानी अमृत ज्यु चखावे जी । इस ।६।
दूर देश का यात्रे जातरी गुरु वन्दन के काज ।
धन सेठाणी माव न जो लायो गुरु महाराज जी । इम ।७।
धन बनामा पुर्णामहजी गुरनी माव ने लाया ।
पूजा परभावना हुवे ठाठ से, आनद मगल गाया जी । इस ।८।
स० २०१३ के माही काया चामासा राजे ।
सावन में पचरगो तपस्या बड़ा ठाठ सु छाजे जी । इस ।९।
दास अर्ज करता कर जोड़ी चोरासी से टारो ।
गोत हमारा बडेर है और जैन धर्म है मारो जी । इस ।१०।
बास हमारो जैसलमेर को आचल गच्छ बखानो ।
भूल होय सो माफ करो गुरु वदना हमारी मानो जो । इस. ।११।

❋

❀ अक्षनिधि तप माहात्म्य कथा ❀

भारतवर्ष के बिहार प्रांत में गणतंत्र की सुप्रसिद्ध राजधानी 'विशाला नगरी' गढ़-मठ मंदिर-महल मकानात-बाजार-बाग-बावड़िया-कुँए—तालाब—वन—उपवन आदि अपने अनुपम साधनों से संसार में सर्वोत्कृष्ट मानी जाती थी। गणतंत्र की अध्यक्षता करने वाले महाप्रतापी—महाराज 'चेटक' अपनी उदार न्याय नीति से विशाला का शासन करते थे। आपके राज्य में प्रजा अपने सुखी जीवन में स्व राज्य का अनुभव करती थी।

महाराजा चेटक भगवान श्रीमहावीर देव के परम श्रावकों में से एक थे। समय २ पर सत्सग का लाभ प्राप्त करने के लिये साधु-संतों के सदुपदेश सुनकर प्रसन्नता का अनुभव करते थे। एक समय भगवान श्री महावीर देव विशाला के उपवन में पधारे। महाराज चेटक बड़े उत्कंठित भावों से अपने राज परिवार एवं नागरिक लोगों को लेकर राजसी ठाठ के साथ भगवान के स्वागत लिये उपवन में पहुँचे। चँवर-छत्र-जूते सवारी और सचित्त का त्याग कर महाराज ने बड़े विनय के साथ भगवान को वंदना की और भगवान का अभिनंदन करते हुए अपनी आत्मा को धन्य माना।

उसी समय देवताओं ने वहां समवसरण-सत्संग सभा की तैयारी की। भगवान अपनी शिष्य साधु मंडली के साथ व्याख्यान पीठ पर विराजे। महाराजा चेटक आदि लोक अपने उचित स्थानों पर जा बैठे। सावधान मन से भगवान का उपदेश सुनने लगे। भगवान ने अपनी सुधामधुर देशना फरमाना शुरु किया।

भव्यात्माओं ! प्राणी मात्र सुख को चाहते हैं। पर ससार में सुख के स्थान में दुःख ही दुःख अनुभव होता है। कारण प्राणी अपने गलत पुरुषार्थ से दुःख के ही बीज बोया करता है। बीज के अनुरूप ही पेड और फलका होना भी स्वाभाविक है।

१—मिथ्यात्व- अज्ञान से, २—अविरति- अमर्यादित जीवन से ३—कषाय-क्रोध मान माया और लोभ से, ४—योग मन वचन कायाकी भवाभिमुख सासारिक प्रवृत्ति से जो पुरुषार्थ किया जाता है उससे जो सस्कार आत्मा में सबधित हो जाते हैं, उन संस्कारों को 'कर्म' कहते हैं। वे कर्म-समय आने पर अपने आप विपाक-फल रूप से भोगने पड़ते हैं।

कर्मों की सत्ता को समूल नष्ट करने के लिये इच्छा रोधन रूप तपो धर्म प्रभावशाली उपाय माना गया है। तपो धर्म कई प्रकार से अनुष्ठित होता है। उनमें भी अक्षयनिधि तप आत्मा की ज्ञान दर्शन चारित्र रूप गुणों की अक्षयनिधि को प्रकट करता है। इस लोक और परलोक में इस अक्षयनिधि तप के प्रभाव से पुरुषोत्तम-पुरुषोत्तम के जैसे मनुष्य अपनी गुलामी को मिटा कर द्रव्य भाव साम्राज्य का स्वामी बन जाता है। महाराजा चेटक ने बड़े विनय के साथ भगवान से प्रार्थना की कि हे भगवन् ! यह भाग्यशाली पुरुषोत्तम कौन हुआ, जिसका पवित्र नामोल्लेख आप श्री के मुखारविंद से सुनने को मिला। भगवान ने फरमाया कि हे राजन ! सावधानता से इस पुण्य चरित्र को सुनिये।

बीसवें तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रत स्वामी के शासन काल में दक्षिण दिशा में के सामुद्रिक किनारे पर भृगुकच्छ नाम का एक भारी व दरगाह स्थल-जल के विशिष्ट-व्यवसायों का एक केन्द्र स्थान बना हुआ था। वहा भद्रकर नाम का एक धन कुबेर सेठ साधु सतों की सत्संगति से अपने गृहस्थ जीवन को मर्यादित

व्रतोंवाला बनाये हुए रहता था। श्रावक भद्रंकर के घर में एक सरल परिणाम वाला शेठ का प्रेम पात्र पुरुषोत्तम नाम का एक नौकर नौकरी करता था।

शेठ के धार्मिक संस्कारों की छाप उनके परिवार में एव नौकर चाकरों पर भी सुन्दर रूप से पड़ी थी। श्रीज्ञानतीर्थ नाम के साधुपुंगव अपने संयमी शिष्यों के साथ एक दिन भृगुकच्छ में पधारे आपने तपो धर्म की व्याख्या के प्रसग में अक्षयनिधि तप की साधना बताई। भद्रंकर सेठ ने अक्षयनिधि व्रत को श्रीगुरु मुख से स्वीकार कर आराधन किया। उस समय सेठ की सेवा में रहने वाले पुरुषोत्तम की भव्य भावना भी अक्षयनिधि व्रत विधि की साधना में आकृष्ट हुई।

प्रभु पूजा, गुरु भक्ति, ज्ञान साधना, तप, ध्यान एव रात्री जागरण आदि में वह पुरुषोत्तम सेठ का अनुगामी हो गया। उस साधना से उसने भारी पुण्य का उपार्जन किया। सेठ ने उसे साधारण नौकरी से हटाकर अपने व्यापार का प्रधान कार्यवाहक बना दिया।

एक दिन दूसरे देशों में व्यापार के निमित्त भेजे हुए जहाज में पुरुषोत्तम मुख्याधिकारी होकर सामुद्रिक यात्रा को कर रहा था। अचानक अंधड़ के उठने से जहाज टूट गया, पर पुरुषोत्तम 'ॐ नमो अरिहंताणं' मंत्र के उच्चारण के साथ मगर-मच्छ की पीठ पर बैठ कर किनारे पर बिना किसी कष्ट के पहुँच गया।

किनारे पर रत्नपुरी नाम की एक नगरी वर्त्तमान थी। वहा का राजा रत्नसिंह उसी रोज अपुत्रिया मृत्यु प्राप्त हो गया था। उस समय मंत्रि मंडल ने यह तय किया कि पांच दिव्य किया

जाय और जिस पुण्यवान पुरुष को दिव्य द्वारा चुना जाय, उसे ही राजा बनाया जाय।

हाथी सजाया गया, घोड़ा तैयार किया गया, कँवारी कन्या माला लिये फिरने लगी चवर और छत्रधारी पुरुष तैयार हुए। इन सबके साथ बाजे बजते हुए मंत्री मण्डल आदि अधिकारी वर्ग प्रमुख नागरिक लोग जलूस के साथ चलने लगे। महाभाग पुरुषोत्तम उसी समय किनारे पर थोड़ी देर सुस्ता कर शहर की ओर आने लगा था कि रास्ते में हाथी ने सूंड ऊंची करके उसे अपने कन्धे पर बिठा दिया। घोड़ा हिनहिनाने लगा। कन्या ने अपनी माला उसे पहना दी। चँवर झुलाये गये एव छत्र धारण किया गया। आकाश में शासन देवता ने "महाराजाधिराज पुरुषोत्तम देव की जय हो" के नारे लगाते हुए फूलों की वृष्टि की।

जलूस के सभी लोग आमोद-प्रमोद में इस नये राजा की जयनाद से स्वागत करने लगे। चारों ओर प्रसन्नता का वायु मण्डल छा गया। एक दिन का नौकर पुरुषोत्तम, महाराजा धिराज पुरुषोत्तम देव बन गया। पद्मावती नाम की एक सद्गुणशीला परम सौन्दर्य शालिनी राज कन्या के साथ विवाह हुआ। दूसरी भी कई सुंदर राज कन्याओं का पाणिग्रहण किया पट्टराणी पद्मावती के साथ अपने सुखी जीवन को बिताते हुए रत्नपुरी का राज्य न्याय नीति के साथ पालन करने लगा।

एक दिन वहां भगवान श्रीमुनिसुव्रत स्वामी पधारे। महाराजा पुरुषोत्तम देव भगवान की वंदना को आये। भगवान ने तप धर्म की महीमा का वर्णन करते हुए अक्षयनिधि का स्वरूप बताया। महाराजा पुरुषोत्तम ने कहा हे भगवान्! किस कारण से एक दिन का सेवक मैं इस साम्राज्य का स्वामी बन गया हूँ।

भगवान् फरमाते हैं कि इसी अक्षयनिधि तप से अनुमोदन से हे देवानुप्रिय! यह सारी साम्राज्य लीला आज भोग रहे हो। पुण्य क्रिया का करना कराना और अनुमोदन करना ये तीनों करने वाले को लाभदायक हो होते हैं।

महाराजा पुरुषोत्तम देव ने विशेषतया सावधानी से अक्षय निधि तप की साधना की। उसका लोगों में भारी प्रचार हुआ। बाद में आपने यशोधर देव नाम के प्रधान पुत्र को राज्य का भार सौंप कर भगवान् श्री मुनिसुव्रत स्वामी के श्रीचरणों में भागवती दीक्षा स्वीकार की।

राजर्षि पुरुषोत्तम देव द्वादशांगी के ज्ञाता होकर विविध तपस्याओं को करते हुए कर्मों की सत्ता समूल नष्ट कर केवल ज्ञान पाकर अरिहंत हो गये। बाद में कई भव्यात्माओं को उपदेश देते हुए पृथ्वी मण्डल को पावन करते हुए अन्त में श्री सिद्धाचल तीर्थाधिराज पर एक मास की संलेखना कर सिद्धि गति को पाये।

इस प्रकार भगवान श्री महावीर स्वामी ने महाराजा चेटक से फरमाया कि हे परम श्रावक! अक्षयनिधि तप के—अधिकारी नर-नारी द्रव्य भाव अक्षयनिधि को प्राप्त करते हैं। महाराजा चेटक ने भगवान को वंदना की, और भगवान की जय नाद के साथ अक्षयनिधि तप की भावना को लेकर वापस विशाला में आये और भगवान् श्री महावीर देव पृथ्वी मंडल को पावन करते हुए विचरने लगे।

इस कथा को सुनकर भव्यात्मा तपस्या में प्रवृत्त हों और आत्म लाभ प्राप्त करें।

॥ इति अक्षयनिधि-तपोविधि-समाप्त ॥

जाय और जिस पुण्यवान पुरुष को दिव्य द्वारा चुन
ही राजा बनाया जाय।

हाथी सजाया गया, घोड़ा तैयार किया गया,
माला लिये फिरने लगी चवर और छत्रधारी पुरुष,
इन सबके साथ बाजे बजते हुए मत्री मण्डल आ
वर्ग प्रमुख नागरिक लोग जलूस के साथ चलने
पुरुषोत्तम उसी समय किनारे पर थोड़ी देर सुस्ता,
और आने लगा था, कि रास्ते में हाथी ने सूंढ उ
अपने कन्धे पर बिठा दिया। घोड़ा हिनहिनाने
अपनी माला उसे पहना दी। चँवर झुलाये गये
किया गया। आकाश में शासन देवता ने
पुरुषोत्तम देव की जय हो" के नारे
वृष्टि की।

जलूस के सभी लोग आमोद-प्रमो
जयनाद से स्वागत करने लगे। चा
मण्डल छा गया। एक दिन का नौकर
पुरुषोत्तम देव बन गया। पद्मावती
परम सौन्दर्य शालिनी राज कन्या
भी कई सुंदर राज कन्याओं
पद्मावती के साथ अपने सुखी
राज्य न्याय नीति के साथ पाल

एक दिन वहा भगवान
महाराजा पुरुषोत्तम देव भगवा
ने तप धर्म की महीमा का वर्णन
बताया। महाराजा पुरुषोत्तम ने
से एक दिन का सेवक मैं इस स

जैन दर्शन में तत्त्व-मीमांसा

—मुनि

जाय और जिस पुण्यवान पुरुष को दिव्य
ही राजा बनाया जाय।

हाथी सजाया गया घोड़ा तैयार
माला लिये फिरने लगी चवर और छ
इन सबके साथ बाजे बजते हुए मंत्री
वर्ग प्रमुख नागरिक लोग जलूस के साथ च
पुरुषोत्तम उसी समय किनारे पर थोड़ी देर
और आने लगा था कि रास्ते में हाथी ने सू
अपने कन्धे पर बिठा दिया। घोड़ा हि
अपनी माला उसे पहना दी। चँवर झुलाये गये
किया गया। आकाश में शासन देवता ने
पुरुषोत्तम देव की जय हो" के नारे
वृष्टि की।

जलूस के सभी लोग आमोद-प्रमोद में
जयनाद से स्वागत करने लगे। चारों ओर
मङ्गल छा गया। एक दिन का नौकर पुरुषोत्तम,
पुरुषोत्तम देव बन गया। पद्मावती नाम की
परम सौन्दर्य शालिनी राज कन्या के साथ विवा
भी कई सुंदर राज कन्याओं का पाणिग्रहण
पद्मावती के साथ अपने सुखी जीवन को बिताते
राज्य न्याय नीति के साथ पालन करने लगा।

एक दिन वहां भगवान श्रीमुनिसुव्रत
महाराजा पुरुषोत्तम देव भगवान की वंदना को
ने तप धर्म की महीमा का वर्णन करते हुए आश्चर्य
बताया। महाराजा पुरुषोत्तम ने कहा हे
से एक दिन का मैं

जैन दर्शन में
तत्त्व-मीमांसा
—मुनि नथमल